बबिता कुमावत

राजस्थान

हाइकु

1. सूनी देहरी,
तेरी चाल की चाप
घर मुस्काए।

2. ना कुछ कहे,
आँखों ने लिख डाला
पूरा जीवन।

3. तेरा नाम ही,
भीतर जले दीप
लंबी है रातें।

4. साँझ उतरे,
चाय की भाप संग
रंगीन यादें।

5. पतझड़ में,
एक गुलाबी फूल
तुम्हारा प्रेम।

6. भीड़ के बीच,
हाथों की वह गर्मी
अपना होना।

7. रूठे मौसम,
तेरी एक मुस्कान
फिर बसंत।

8. धीमी बारिश,
बारी पर ठहरी
तेरी प्रतीक्षा।

9. मन की मिट्टी,
प्रेम पहला बीज
हरियाली–सी।

10. थकी दुपरी,
तेरी आवाज़ भर
छाँव हो गई।

11. चाँदनी रात,
बिना मिले भी तुम
पास हो लगे।

12. प्रेम शायद
है आख़िरी रोटी का
बचा हो भाग।

कश्मीरी लाल

हाइकु

1)शाम हो रही
परिंदे लौट रहे
अपने घर

2)बादल भागे
जब भी आगे पीछे
वर्षा शुरू है

3)पत्ते झरते
पतझर के बीच
नए की आशा

4)भूमि सूखी है
हरियाली की घाट
बागों के बीच

5)उड़ेल रहे
जब धरा के मित्र
वर्षा का पानी

6)सर्द मौसम
झील जम गई है
बर्फ के साथ

7)झील के बीच
दिखे चाँद सितारे
हाथ ना आते

8)ऋतु बदली
पतझर आ गई
पक्षी उदास

9)पक्षी बेचैन
बसंत को देखने
रख उड़ीक